पं० दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की प्रासंगिकता

मोहित सिंह रौतेला *

सारांश

पं0 दीनयाल उपाध्याय (25 सितंबर 1916–11 फरवरी 1968) राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के चिंतक और संगठनकर्ता थे। उन्होंने भारत की सनातन विचारधारा को युगानुकूल रूप में प्रस्तुत करते हुए देश को एकात्म मानववाद नामक विचारधारा दी। वे एक समावेशित विचारधारा के समर्थक थे जो एक मजबूत और सशक्त भारत चाहते थे। राजनीति के अतिरिक्त साहित्य में भी उनकी गहरी अभिरुचि थी। उपाध्याय जी का उद्देश्य स्वतंत्रता की पुर्नरचना के प्रयासों के लिए विशुद्ध भारतीय तत्व दृष्टि प्रदान करना था। वे जनसंघ के आर्थिक नीति के रचनाकार भी थे। भारतीय सभ्यता में प्राचीन काल से विकसित ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' के विचार को उन्होंने अपने विचारों के माध्यम से प्रसांगिक बनाने का प्रयास किया। वे भारतीय हिंदू धर्म और पुरातन नीतियों को नवीन परिप्रेक्ष्य में विस्तार करने के लिए आजीवन प्रयासरत रहे। जिसमें उनका ''एकात्म मानववाद'' रूपी विचार इसी पृष्ठभूमि में निर्मित हुआ है। उन्होंने व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र का मार्गदर्शन करने में सक्षम एवं मौलिक और सशक्त विकल्प विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया।

मूल शब्द : राष्ट्रवाद, धर्म, राजनीति, समाज, मानववाद, सामाजिक सुधार।

पं0 दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का सामाजिक योगदान

पं0 दीनदयाल उपाध्याय का कथन है कि ''हमारी राष्ट्रीयता का आधार भारत माता है, केवल भारत ही नहीं। माता शब्द हटा दीजिये तो भारत केवल जमीन का टुकड़ा मात्र बनकर रह जाएगा''।

देश में जितने महापुरुष हुए हैं वह सरलता से महान नहीं हुए हैं। उन्होंने अपने जीवन को जिंदगी की भट्टी में झोंक दिया, तब वे महान व्यक्ति कहलाए और लोगों ने उनके कार्यों, उनके आदर्शों को अपनाया। अर्थात महान त्याग करके महान बना जाता है। ''महानता कोई वस्तु नहीं है। इन्हीं महान पुरुषों की संख्या में से एक थे पं0 दीनदयाल उपाध्याय''।

1916 में राजस्थान के दिया नामक ग्राम में जन्मे पं0 दीनदयाल उपाध्याय ने जीवन से संघर्ष करते हुए अथक परिश्रम के साथ सफलता की ऊंचाइयों को चूमा। उन्होंने ना सिर्फ अपने सामाजिक कार्यों के माध्यम से देश की उन्नति में योगदान दिया। बल्कि अपने विचारों से समाज को एक नयी दिशा दी।

इन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में संपादन कार्य एवं साहित्य लेखन के क्षेत्र में पुस्तकें लिख इस क्षेत्र में अपनी प्रतिभा प्रदर्शित की। 1947 मे पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी ने राष्ट्रधर्म प्रकाशन लिमिटेड की स्थापना की। इसके अंतर्गत राष्ट्रधर्म, पाचंजन्य व स्वदेशी नामक पत्र प्रकाशित होते थे।

'पाचंजन्य' पर सरकार द्वारा प्रतिबंध लगाए जाने के बाद उन्होंने ''हिमालय पत्रिका'' नाम से दूसरा पत्र प्रकाशित कर अपने विचारों के प्रभाव को रुकने नहीं दिया। सरकार द्वारा जब इसे भी प्रतिबंधित कर दिया तो उन्होंने ''देशभक्त'' नाम से एक नया पत्र का प्रकाशन शुरू कर दिया। यह प्रदर्शित करता है कि राष्ट्र के प्रति और राष्ट्रीयता के विचारों के प्रसार के प्रति उनका कितना लगाव था।

उपाध्याय जी बोलते कम थे सुनते अधिक थे। अपनी वैचारिक अभिव्यक्ति में भी समन्वयवादी, समझौतावादी थे किंतु सिद्धांतों से गिरकर अथवा परिस्थिति से पराजित होकर उन्होंने ना समझौता किया ना समन्वय। जनसंघ को नवपथ की ओर अग्रसर कर राजनीति के विशाल प्रांगण में खड़े कर देने का साहस और जीवन केवल दीनदयाल जी में ही था।

एकात्म मानववाद पं0 दीनदयाल जी की अद्वितीय, विशिष्ट एवं मौलिक रचना है। कौटिल्य के ''अर्थशास्त्र'', तिलक के ''गीता रहस्य'' और महात्मा गांधी के ''हिंद स्वराज्य'' के पश्चात पंडित दीनदयाल उपाध्याय – रचित 'एकात्म मानववाद' राजनीति सिद्धांत के रूप में भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण योगदान है। उपाध्याय जी ने अपने समकालीन भारत की दुर्दशा, सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों का विश्लेषण किया। मानव पूंजीवाद, मार्क्सवाद और गांधीवाद जैसे विचारों से अंतर्निहित विडंबनाओं के कारण एक राष्ट्रीय समस्या का निदान करने में असफल रहा। ऐसी स्थिति में उन्होंने व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र का मार्गदर्शन करने में सक्षम एवं मौलिक और सशक्त विकल्प विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया।

* शोधार्थी, डी. एस. बी. परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

वर्तमान का भारत एकात्म मानववाद में आशा की नई किरण खोज रहा है। एकात्म मानववाद दर्शन मानव के सामाजिक, आर्थिक तथा मानसिक विकास राष्ट्रीयता एवं राष्ट्रीय चुनौतियों तथा समकालीन समस्याओं पर होने वाले किसी भी विचार – विमर्श का अनिवार्य अंग बनता जा रहा है। यह दीनदयाल जी के दर्शन को तो स्पष्ट करता ही है साथ वर्तमान भोगवादी संस्कृति में उपजी तमाम आधुनिक विसगंतियों को जानने समझने तथा उसके निराकरण की कुंजी भी उपलब्ध करवाता है।

पं0 दीनदयाल जी के अनुसार एकात्म मानववाद का शाब्दिक अर्थ मानव के शरीर, मस्तिष्क, बुद्धि और चार पुरुषार्थ – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष से एकमत होते हुए तब अनुरूप होना है। यह दर्शन मानव–जाति की मानसिक स्वतंत्रता तथा उसके पशुत्व से मनुष्यत्व और फिर मनुष्यत्व से देवत्व की यात्रा का परिचय प्रस्तुत करता है। वास्तव में यह मानव के सर्वोच्च आत्मिक और मानसिक विकास का दर्शन है। यह एक ऐसा नवीन घोषणा–पथ है जिसमें भौतिक तत्वों पर नैतिक मूल्यों की सर्वोच्चता स्थापित की गई है।

पाश्चात्य विचारधारा का विश्लेषण करते हुए उनके अनुयायियों की कड़ी भर्त्सना करते हुए पं0 दीनदयाल उपाध्याय ने कहा – अंग्रेजों के जाने के बाद गांधीजी ज्यादा दिनों तक जिंदा नहीं रह पाए तथा राजसत्ता जिनके हाथों में आई वे भारत की भाषा और भावना को न तो समझ पाए और न उसके वह सपने रख पाए जो उसे अपने लगते। अंग्रेजों से लड़ते समय हमने चाहे जितना स्वदेशी का नारा लगाया हो किंतु उसके जाने के बाद हमने संपूर्ण जीवन को तथा अपनी समस्याओं को उसी के चश्मे से देखा। फलतः हमारी राजनीति, अर्थनीति, समाज व्यवसाय साहित्य और संस्कृति में अंग्रेजीयत की गहरी छाया है। भारतीयता अगर कहीं दिखती है तो वह ऊपर है। हमारी मौलिक धारणाएं विदेशी हैं[1]।

विभिन्न राजनैतिक दल, चाहे वे समाजवादी हों या गैर समाजवादी यूरोप की राजनीतिक विचारधाराओं से ही प्रभावित हैं तथा वे भारत को किसी ना किसी देश को अनुकृति बनाना चाहते हैं।

पं0 दीनदयाल उपाध्याय ने अपनी मृत्यु से 4 वर्ष पूर्व एकात्म मानववाद को दर्शन दिया। एकात्म मानववाद को समझने के लिए उनकी पूर्व प्रकाशित अन्य रचनाओं – सम्राट चद्रंगुप्त (1946), जगतगुरु शकंराचार्य (1947), अखंड भारत (1952), हमारा कश्मीर (1953), बेकारी की समस्या और उसका हल (1954) और कई लेखों, व्याख्यानों, वक्तव्यों, पत्रों तथा भाषाओं का गहन अध्ययन जरूरी है। एकात्म मानववाद को दीनदयाल उपाध्याय की संपूर्ण रचनाओं का सार कहा जा सकता है, क्योंकि एक छोटी सी पुस्तक सिलसिलेवार ढंग से उनके चार महत्वपूर्ण भाषणों का संग्रह है। जो उनके चिंतन और विचारों का दर्पण है। एकात्म मानववाद एक ऐसा बीज था, जिसमें दीनदयाल उपाध्याय के विचार रूपी वटवृक्ष का उदय हुआ। दीनदयाल उपाध्याय के विचारों में रुचि रखने वालों के लिए एकात्म मानववाद दर्शन की महत्ता सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसी से समस्त समस्याओं का समाधान सभंव है।

दीनदयाल उपाध्याय के विचारों के अथाह समंदर में गहरे गोते लगाने की इच्छुक साधकों के लिए भी ''एकात्म मानववाद'' नामक पुस्तक प्राचीन भारतीय परंपरा को आधुनिक संदर्भ में विलेषित करती है। अत्यंत सहज, और सरल भाषा में मानववाद का वैज्ञानिक और दार्शनिक विवेचन तथा व्याख्या करना ही इसका सबसे बड़ा गुण और अद्भुत सौंदर्य है। एकात्म मानववाद की विशिष्टता तथा सौंदर्य इस बात में निहित है कि इसे जितनी भी बार पढ़ेंगे, उतनी ही बार आपको नया अंतर्बोध प्राप्त होगा। वास्तव में यह एक शास्त्रीय कृति है, जिसका उद्देश्य भारत तथा भारतीयों का पुनरुत्थान करना है।

इस पुस्तक को लिखने का तात्कालिक कारण नेहरू के विकास की अवधारणा की आलोचनात्मक व्याख्या करना है। परंतु इसकी रचना के पीछे उनका मूल उद्देश्य संपूर्ण पाश्चात्य एवं भौतिक खासकर पूंजीवाद, मार्क्सवाद, समाजवाद तथा अंधाधुन्ध औद्योगिकीकरण की समालाचेना था। एकात्म मानववाद में बड़े ही प्रभावी रूप से प्रमुख मुद्दे हमारे सामने आते हैं। सर्वप्रथम उस समय की राजनीतिक घटनाओं का घटना तथा दूसरा उपाध्याय जी को भारत की शासन–व्यवस्था के विभिन्न अंग–उपांगों का प्रत्यक्ष अनुभव जिसने उनकी पूरी विचार–प्रक्रिया तथा रचना प्रक्रिया को गहराई से प्रभावित किया।

तीसरा तत्कालीन सामाजिक–राजनीतिक परिस्थितियों में भारत की प्रगति की दिशा क्या हो सकती है। अंतिम और सबसे प्रमुख मुद्दा था – नये भारत राष्ट्र का निर्माण करना।

एकात्म मानववाद में इन सभी वैचारिक धाराओं का मिलन होता है और जिसके परिणाम स्वरूप एक नवीन तत्व का जन्म होता है जिसके द्वारा उपाध्याय जी स्वातंत्र्योत्तर भारत के विकास के पश्चिमी प्रतिमान के खिलाफ जन जागरण का समर्थन करते हैं। एकात्म मानववाद भारतीय सभ्यता में आधुनिक भोगवादी सभ्यता के उदय की समालोचना है। वास्तव में एकात्म मानववाद संपूर्ण मानव जीवन के सिद्धातों की तह को खोखली नजर आ रही है। यह जीवन का एक सिद्धांत है, जो स्थाई ना होकर परिवर्तनशील है। एक नए विकल्प की तलाश में भटक रहा काई भी सिद्धांत स्थाई हो ही नहीं सकता। वास्तव में, यह एक ऐसी गतिशील दर्शन है जो उपाध्याय जी के सार्वजनिक जीवन के अनुभवों के साथ–साथ समृद्ध और

सुसंस्कृत होता गया।

प्रो0 बलराज मधोक के अनुसार

''भारतीयकरण का आशय है भारत और भारतीय संस्कृति के प्रति रागात्मक भावात्मक संबंध रखना''। अतः किसी व्यक्ति के भारतीयकरण का अर्थ हुआ उसमें संस्कारों द्वारा नया सजग सामाजिक एवं राजनैतिक प्रयासों द्वारा भारतीयता की भावना भरना ताकि वह भारत में अपना तादात्म्य में कर सके और अपने सामाजिक, धार्मिक, भाषायी, राजनीतिक आदि वर्गों से ऊपर भारत के प्रति राष्ट्रीय भावना उज्जीवित करने का ही दूसरा नाम है भारतीयकरण[2]।

उपाध्याय जी ने हमेशा खासकर एकात्म मानववाद के द्वारा मानव जीवन के मूलभूत प्रश्न को उठाया है। एकात्म मानववाद की उचित समझ के लिए इसके ऐतिहासिक संदर्भों को समझना आवश्यक है।

1. सम्राट चंद्रगुप्त का उदय एवं उसका संपूर्ण शासनकाल।
2. शंकराचार्य की जीवनी तथा उपनिषदों और वेदांत सूत्रों पर उनके प्रतिपादित भाष्य।
3. भारत की स्वतंत्रता एवं उसमें गांधी की भूमिका।
4. प्रधानमंत्री के रूप में नेहरू की भूमिका।
5. चीन युद्ध।
6. दीनदयाल जी के व्यापक अनुभव चितंन मनन और प्रयोग इत्यादि।

एकात्म मानववाद पाश्चात्य सभ्यता के सैद्धांतिक आधार को रचनात्मक चुनौती है। हिंदू धर्म एवं उसकी समृद्ध परंपराओं से सभ्येतामूलक संसाधनों का भरपूर प्रयोग करते हुए उपाध्याय जी ने औद्योगिक पूंजीवाद, साम्राज्यवाद तथा मार्क्सवाद की आलोचना करने के लिए एक नवीन सैद्धांतिक ढांचे का प्रतिपादन किया।

वहीं दूसरी ओर उन्होंने कुछ मौलिक अवधारणाओं चित्र और वृत्ति का विकास किया जो वर्तमान समय में काफी प्रासंगिक हैं।

अपने ज्ञान व्यवहार को युग के अनुसार परिभाषित करना होगा तथा आधुनिक एवं पाश्चात्य ज्ञान और सत्य को राष्ट्रीयता के सांचे में ढाल कर प्रयोग करने की विधि विकसित करनी है।

हमें धर्मराज्य, लोकतंत्र, सामाजिक समानता और आर्थिक विकेन्द्रीकरण को अपना लक्ष्य बनाना होगा। इन सब का सम्मिलित निष्कर्ष ही हमें ऐसे जीवन दर्शन उपलब्ध करा सकेगा जो आज के समस्त संसाधनों में हमें सुरक्षा प्रदान कर सके। आप इसे किसी भी नाम से पुकारिये। हिंदुत्ववाद, मानवतावाद अथवा अन्य कोई भी नयावाद किंतु यही एक नव मार्ग भारत की आत्मा अनुरूप होगा। संभव है विशांति के चौखट पर खड़े विश्व के लिए भी यह मार्गदर्शन का काम कर सके।

''कमल कीचड़ में ही खिलते हैं, यह उक्ति पंडित दीनदयाल उपाध्याय पर ठीक बैठती है। निर्धनता में जन्म लेकर राष्ट्र चिंतक के शीर्ष पद पर सुशोभित होकर उन्होंने सिद्ध कर दिया। बाल्यकाल से ही दीनदयाल जी कुशाग्र बुद्धि और ज्ञान शील प्रवृत्ति के रहे''[3]।

पं0 दीनदयाल जी ने एक आत्मनिर्भर भारत की कल्पना की थी। वह केवल वृहद उद्योगों के माध्यम से औद्योगिक भारत को कुछ स्थानों पर केन्द्रीकृत होने के स्थान पर, लघु तथा कुटीर उद्योगों के द्वारा देश के सभी क्षेत्रों में आर्थिक प्रगति के लाभ स्वराजेगार एवं लघु उद्यमों में रोजगार सर्जन की क्षमता बढ़ाना आवश्यक मानते थे। इस समूह तक पहुंच लक्ष्य की पूर्ति हेतु भारत सरकार ने स्वामी विवेकानंद के ''उत्तिष्ठत, जाग्रत'' से प्रेरित होकर – योजना प्रारंभ की है। किसी भी छोटी–बड़ी विकास योजना की सफलता का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है कि इन योजनाओं के माध्यम से ही दी जा रही सहायता, ऋण, अनुदान व लाभ राशि वास्तव में सही एवं लक्षित लाभार्थी पा सके। परंतु पिछली सरकारों के अधीन लगभग 70 वर्षों की शासन व्यवस्था के अंतर्गत विकास क्रम, भ्रष्टाचार अधिक बड़ा है[4]।

दीनदयाल उपाध्याय प्रणीत एकात्म मानवतावाद के संदर्भ में एक चर्चा होती रहती है कि यह 'वाद' है या 'दर्शन। वाद पाश्चात्य परंपरा का वाहक है, जबकि दर्शन भारतीय परंपरा का व्यक्तिवाद व समाजवाद को उन्होंने पृष्ठभूमि में वर्णित किया है। अतः एकात्म मानववाद एकदम संगत शब्द का प्रयोग किया है। यथा संधिवाद या दर्शन दोनों का ही प्रयोग किया जा सकता है यह कोई मुद्दा नहीं है''[5]।

पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी का मानना था कि प्रत्येक राष्ट्र अपनी आवश्यकताओं व परिस्थितियों के अनुसार ही विभिन्न संस्थाओं का निर्माण करता है तथा यह संस्थायें समय के अनुसार परिवर्तित होनी चाहिए। राष्ट्र के विकास हेतु एक ऐसी सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था होनी चाहिए जिसमें लोग सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तर पर समान रूप से

निर्णय निर्माण में भागीदार हों। दीनदयाल जी को जनसंघ की आर्थिक नीति का रचनाकार माना जाता है और समाज–जन दीनदयाल जी को भाजपा के पूर्व नेता के रूप में ही जानते हैं जबकि वह एक महान राष्ट्र नायक वह विलक्षण विचारक थे।

उनके चिंतन का केंद्र कतार का अंतिम व्यक्ति था। उन्होंने मानव की बुनियादी आवश्यकताओं के साथ–साथ कृषि उद्योग, शिक्षा नियोजन, महंगाई विकेद्रीकरण, पशुपालन, मशीनीकरण, उपभोग, उत्पादन, वितरण, बेरोजगारी जैसे महत्वपूर्ण आर्थिक मुद्दों पर गहन चितंन किया तथा इन आर्थिक समस्याओं के समाधान हेतु भारतीय प्रकृति परिस्थिति और संस्कृति के अनुसार समाधान प्रस्तुत किये जो कि वर्तमान समय में गंभीर होती आर्थिक समस्याओं के वास्तविक समाधान में पूर्णतया प्रासंगिक है।

पं0 दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार भारत की समस्त नीतियां भारतीयतामुखी होनी चाहिए। ना तो हमारे पास पाश्चात्य पूंजीवाद अनुकूल और न ही समाजवाद या साम्यवाद भारतीय जीवन दर्शन इन समस्त वादों से परे विशुद्ध मानवतावादी हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय को उपरोक्त अनमोल विचारों का अनुसरण करके हम आज के आधुनिक युग में भी भारत का चहुँमुखी विकास कर सकते हैं।

संदर्भ सूची –

1. उपाध्याय पंडित दीनदयाल राष्ट्र चिंतन की साधना और सिद्धि, इग्लोंइतिक इंडिया कलेक्शन दिल्ली, वेब से, पृष्ठ–58।
2. मधोंक बलराज, भारतीकरण ई बुक राजपाल एंड संस दिल्ली, 1986, पृष्ठ–62।
3. सिंह, अमरजीत – मैं दीनदयाल बोल रहा हूं, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली 2015, पृष्ठ – 62।
4. उपाध्याय पंडित दीनदयाल, राष्ट्रीय जीवन की दिशा, 2015, लोकहित प्रकाशन लखनऊ, पृष्ठ 144–145।
5. उपाध्याय, दीनदयाल – एकात्म मानववाद, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली – 2015, पृष्ठ–13।